SANSKRIT CORE& DSE

Question bank for **UG Sem 6th** SKMU DUMKA

By-**Dr. D K MISHRA**, SP COLLEGE DUMKA

पद्य व्याख्या एवं अनुवाद

गीतगोविन्दम्

1. क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे । धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ।केशव धृतकच्छपरुप जय जगदीश हरे ।।
2. वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना । शशिनि कलंकलेव निमग्ना ।केशव धृतसूकररूप जय जगदीश हरे ।।
3. तव करकमलवरे नखमद्भुतश्रृंगम । दलितहिरण्यकशिपुतनुभृगंम ।केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे ।।
4. छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन । पदनखनीरजनितजनपावन ।केशव धृतवामनरुप जय जगदीश हरे ।।
5. क्षत्रिययरुधिरमये जगदपगतपापम । सनपयसि पयसि शमितभवतापम । केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे ।।
6. वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम । दशमुखमौलिबलिं रमणीयम ।केशव धृतरघुपतिवेष जय जगदीश हरे ।।
7. वहसि वपुषे विशदे वसनं जलदाभम । हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम ।केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ।।
8. निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम । सदयहृदयदर्शितपशुघातम ।केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ।।
9. म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम । धूमकेतुमिव किमपि करालम ।केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ।।

10. ***वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद् विभ्रते।***
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारूण्यमातन्वते।
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः।।

नीतिशतकम्

1. अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि नरं न रञ्जयति।।

2. साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम्।।

3.येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

4. जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्सङ्गति कथय किं न करोति पुंसाम्।।

5. दाक्षिणं स्वजने दया परजने शाठ्यं सदा दुर्जने
प्रीतिः साधुजने नयो नृपजने विद्वज्जनेष्वार्जवम्।
शौर्यं शत्रुजने क्षमा गुरूजने नारीजने धूर्त्तता
ये चैवं पुरूषा कलासु कुशलास्तेष्वेव लोकस्थितिः।।

6. परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।

7. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।

8. यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।।

9. दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।
10. कुसुमस्तबकस्येव द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः।
मूर्ध्निवा सर्वलोकस्य शीर्येत वन एव वा।।

11. केयूराणि न भूषयन्ति पुरूषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरूषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।

12. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीनः पशुः।।

13. को लाभो गुणिसंगमः किमसुखं प्राज्ञैतरैः संगतिः
का हानिः समयच्युतिर्निपुणता का धर्मतत्त्वे रतिः।
कः शूरो विजितेन्द्रियः प्रियतमा कानुव्रता किं धनं
विद्या किं सुखमप्रवासगमनं राज्यं किमाज्ञाफलम्।।

14. कान्ताकटाक्षविशिखा न लुनन्ति यस्य,
चित्तं न निर्दहति कोपकृशानुतापः।
कर्षन्ति भूरि विषयाश्च न लोभपाशै–
र्लोकत्रयं जयति कृत्स्नमिदं स धीरः।।

15. निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

16. भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः नवाम्बुभिर्भूमिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरूषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।

मेघदूतम्

1. कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्मितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

2. तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी
नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।
आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श।।

3. तस्य स्थित्वा कथमपि पुरः कौतुकाधानहेतो–
रन्तर्वाष्पश्चिरमनुचरो राजराजस्य दध्यौ।
मेघालोके भवति सुखिनोऽप्यन्थावृत्ति चेतः
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे।।

4. प्रत्यासन्ने नभसि दयिताजीवितालम्बनार्थी
जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन्प्रवृत्तिम्।

स प्रत्यग्रैः कुटुजकुसुमैः कल्पितार्घाय तस्मै
प्रीतः प्रीतिप्रमुखवचनं स्वागतं व्याजहार।।

5. धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणास्चेतनाचेतनेषु।।

6. जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं
याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमेलब्धकामा।।

7. संतप्तानां त्वमसि शरणं तत्पयोद! प्रियायाः
संदेशं मे हर धनपति क्रोधविश्लेषितस्य
गन्तव्या ते वसतिरलका नाम यक्षेश्वराणां
वाह्योद्यानस्थितहरशिरश्चन्द्रिका धौतहर्म्या।।

8. त्वमारूढं पवनपदवीमुद्गृहीतालकान्ताः
प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसत्यः।
कः सन्नद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः।।

9. तां चावश्यं दिवसगणनातत्परामेकपत्नी–
मव्यापन्नामविहतगतिर्द्रक्ष्यसि भ्रातृजायाम्।
आशाबन्धः कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां

सद्यः पाति प्रणयि हृदयं विप्रयोगे रूणद्धि।।

10. मन्दं–मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां
वामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः
सेविष्यन्ते नसनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः।।

आलोचनात्मक प्रश्न (*CORE*)

1. महाकवि कालिदास केव्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालें।
2. पठितांश के आलोक में उपमा कालिदासस्य उक्ति की समीक्षा करें।
3. कुमारसंभवम् पंचम सर्ग के आधार पर पार्वती का चरित्रचित्रण करें।
4. मेघदूतम् के आधार पर यक्ष केमनोदशा का वर्णन करें।
5. ''कालिदास प्रकृति के सुकुमार कवि हैं'' इस कथन पर अपना विचार प्रस्तुत करें।
6. कालिदास के काव्य–शैली की समीक्षा करें।
7. कौटलीय अर्थशास्त्र के प्रथम अधिकरण के विषयवस्तु का सार प्रस्तुत करें।
8. अर्थशास्त्र के आलोक में विद्या पर प्रकाश डालें।
9. कादम्बरी स्थित शुकनासोपदेश का सार प्रस्तुत करें।
10. बाणभट्ट कर रचना के आलोक में 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' उक्ति की समीक्षा कीजिए।

आलोचनात्मक प्रश्न (*DSE*)

1. कवि भर्तृहरि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालें।
2. नीतिशतक के आलोक में सत्संगति एवं विद्या के महत्त्व का प्रतिपादन करें।
3. कवि जयदेव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालें।
4. जयदेव कृत गीतगोविन्दम् के दशावतारस्तुति का वर्णन करें।
5. नाटककार भास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालें।
6. कर्णभार नाटक का सारांश लिखें।
7. रत्नावली नाटिका का सारांश प्रस्तुत करें।
8. रत्नावलीकार का परिचय देते हुए संस्कृत साहित्य में उनका स्थान निरूपित करें।
9. प्रतिमानाटक की कथावस्तु संक्षेप में लिखें।
10. टिप्पणी लिखें : खण्डकाव्य, नाटक, नाटिका, गीतिकाव्य।

****

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कालिदास निम्नलिखित में से किसमें अतिनिपुण हैं–

(क) अर्थगौरव में (ख) उपमा में (ग) पदलालित्य में (घ) इनमें से किसी में भी नहीं।

2. गीतिकाव्य की प्राचीनतम उपलब्ध रचना कौन–सी है –

(क) मेघदूतम् (ख) घटकर्पर (ग) श्रृंगाारशतक (घ) अमरूकशतक

3. मेघदूत में कितने श्लोक प्रामाणिक रूप से हैं जिस पर मल्लिनाथ की टीका मिलती है –

(क) 75 (ख) 101 (ग) 111 (घ) 121

4. मेघमार्ग का वर्णन मेघदूत के किस अंश में है –

(क) पूर्वमेघदूतम् में (ख) उत्तरमेघ में (ग) दोनों में (घ) किसी में नहीं।

5. कालिदास के अनुसार मेघ निम्नलिखित में से किनसे बना हुआ है –

(क) धूम, ज्योतिः, सलिल और मरूत (ख) धूम, ज्योतिः और मरूत

(ग) धूम और ज्योतिः (घ)सिर्फ सलिल।

6. कालिदास के अनुसार कौन जड़ और चेतन में अन्तर नहीं कर पाता –

(क) शोकार्त (ख) मदार्त (ग) कामार्त (घ) क्रोधार्त।

7. मेघदूतम् की गणना निम्नलिखित में से किसमें होती है –

(क) बृहत्त्रयी (ख) प्रस्थानत्रयी (ग) लधुत्रयी (घ) वेदत्रयी

8. मेघदूतम् का यक्ष विरह के दिन कहाँ व्यतीत करता है –

(क) रामगिरि के आश्रमों में (ख) दशार्ण प्रदेश की राजधानी विदिशा में

(ग) अज्ञात वन प्रदेश में (घ) अलका पुरी के महलों में।

9. कालिदास रचित ग्रन्थों में सबसे अर्वाचीन रचना कौन सी है –

(क) मेघदूतम् (ख) रघुवंशम् (ग) अभिज्ञानशाकुन्तम् (घ) ऋतुसंहारम्

10. कालिदास रचित ग्रन्थों में सबसे प्राचीन रचना कौन सी है –

(क) मेघदूतम् (ख) मालविकाग्निमित्रम् (ग) ऋतुसंहारम् (घ) अभिज्ञानशाकुन्तम्

11. कालिदास की उपाधि निम्नलिखित में से क्या है –

(क) दीपशिखा (ख) कामार्त–पुरूष (ग) घण्टामाघ (घ) कान्ता–प्रेमी

12. दीपशिखा की उपाधि से विभूषित कवि कालिदास को यह उपाधि उन्हें उनके किस ग्रन्थ के आधार पर दी गई है –

(क) मेघदूतम् (ख) अभिज्ञानशाकुन्तम् (ग) रघुवंशम् (घ) कुमारसंभवम्

13. 'मेघदूतम्' किस छन्द में लिखा गया है –

(क) वंशस्थ (ख) आर्या (ग) मन्दाक्रान्ता (घ) शिखरिणी

14. महाकवि कालिदास ने किस महाकाव्य की रचना सर्वप्रथम की –

(क) मेघदूतम् (ख) अभिज्ञानशाकुन्तम् (ग) रघुवंशम् (घ) कुमारसंभवम्

15.'कश्चित्' शब्द से प्रारम्भ होने वाला काव्य है–

(क) मेघदूतम् (ख) शिशुपालवधम् (ग) रघुवंशम् (घ) किरातार्जुनीयम्

16. 'रघुवंशम्' महाकाव्य में कितने सर्ग हैं –

(क) 16 (ख) 18 (ग) 19 (घ) 20

17. कालिदास की प्रथम नाट्य कृति कौन–सी है –

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ख) विक्रमोर्वशीयम्

(ग) मालविकाग्निमित्रम् (घ) इनमें से कोई नहीं

18. ''काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला'' कहकर भारतीय आलोचकों ने किस कवि की कौन सी रचना की रचना की प्रशंसा की है –

(क) भवभूति की उत्तररामचरित (ख) विशाखदत्त की मुद्राराक्षस

(ग) कालिदास की अभिज्ञानशाकुन्तलम् (घ) भास की स्वप्नवासवदत्ता

19. निम्नलिखित में कौन सी कृति सर्गों में विभक्त है –

(क) मेघदूतम् (ख) अभिज्ञानशाकुन्तम् (ग) रघुवंशम् (घ) इनमें से कोई नहीं।

20. जर्मन कवि 'गेटे' ने किस कृति की प्रशंसा की है –

(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ख) विक्रमोर्वशीयम् (ग) मालविकाग्निमित्रम् (घ) मेघदूतम्

21. कालिदास ने किस शैली को प्रायः अपनाया है –

(क) वैदर्भी (ख) पांचाली (ग) गौडी (घ) लाटी

22. ''रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'' – सूक्ति से सम्बद्ध काव्य है –

(क) मेघदूतम् (ख) किरातार्जुनीयम् (ग) रघुवंशम् (घ) शिशुपालवधम्

23. ''कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'' से युक्त रचना है –

(क) मेघदूतम् (ख) किरातार्जुनीयम् (ग) रघुवंशम् (घ) सौन्दरनन्दम्

24. ''याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'' किस कवि के वाक्य हैं–

(क) भवभूति (ख) भारवि (ग) अश्वघोष (घ) कालिदास

25. कालिदास का समय निर्धारित करने में कौन–सा मत अधिक तर्कसम्मत है –

(क) छठी शताब्दी का मत (ख) चतुर्थ शताब्दी का मत

(ग) ईसा पूर्व द्वितीय शती का मत (घ) ईसा पूर्व प्रथम शती का मत

26. निम्नलिखित में से कौन सी रचना कालिदास की नहीं है –

(क) मेघदूतम् (ख) किरातार्जुनीयम् (ग) रघुवंशम् (घ) मालविकाग्निमित्रम्

27. मेघदूतम् का यक्ष मेघ को कहाँ भेजना चाहता है –

(क) अलकापुरी (ख) स्वर्गपुरी (ग) लंकापुरी (घ) मेनकापुरी

28. कालिदास ने अपने काव्यों में मुख्यतया किस रस का वर्णन किया है –

(क) श्रृंगार (ख) करूण (ग) हास्य (घ) वीर

29. मेघदूतम् का यक्ष क्यों शापित हुआ –

(क) चोरी काने के कारण (ख) कर्त्तव्य में प्रमाद के कारण

(ग) मिथ्या बोलने के कारण (घ) उपर्युक्त सभी कारणों से

30. कालिदास के अनुसार संतप्तों का रक्षक है –

(क) अग्नि (ख) वसन्त (ग) मेघ (घ) पवन

31. कालिदास के अनुसार मेघ कैसा प्राणी है –

(क) अचेतन (ख) चेतन (ग) अचेतन और चेतन (घ) न अचेतन और न चेतन ही

32 मेघदूत की कथा वस्तु है –

(क) रामायण पर आश्रित (ख) महाभारत पर आधारित

(ग) कवि–कल्पित (घ) लोक–कथा पर आधारित

33. मेघदूतम् में कवि ने किस प्रकृति का मार्मिक चित्रण किया है –

(क) बाह्य प्रकृति का (ख) अन्तः प्रकृति का

(ग) बाह्य और अन्तः दोनों प्रकृति का (घ) मेघदूत में प्रकृति चित्रण नहीं है

34. मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक पाद में कितने अक्षर हैं–

(क) 12 (ख) 15 (ग) 17 (घ) 19

35. मेघदूतम् में कालिदास ने मंगलाचरण के किस रूप को अपनाया है –

(क) आशीर्वादात्मक (ख) नमस्क्रियात्मक (ग) वस्तुनिर्देशात्मक (घ)इनमें से कोई नहीं।

36. कुछ विद्वानों ने मेघदूतम् का मूल स्रोत किस पुराण को माना है –

(क) ब्रह्मवैवर्त पुराण (ख) अग्नि पुराण (ग) पद्मपुराण (घ) शिवपुराण

37. संस्कृत–साहित्य में दूत–काव्यों में सबसे प्राचीन उपलब्ध तथा ज्ञात दूतकाव्य कौन–सा है

(क) मेघदूत (ख) पवनदूत (ग) शुकदूत (घ) हनुमद्दूत

38. मेघदूत में वर्णित अलकापुरी कहाँ स्थित है –

(क) कैलास के अङ्क में (ख) इन्द्र की राजधानी में

(ग) रामगिरि पर्वत पर (घ) इनमें से कोई नहीं।

39. महाकविकालिदासकृत मेघदूतम् पर मल्लिनाथ की प्रसिद्ध टीका का क्या नाम है

(क) संजीवनी (ख) कुचमर्दनी (ग) प्रबोधिनी (घ) इनमें से कोई नहीं।

40. महाकवि कालिदासकृत मेघदूतम् में कामी यक्ष ने मेघ का प्रथम दर्शन कब किया

(क) आषाढ मास के प्रथम दिन (ख) श्रावण मास के प्रथम दिन

(ग) भाद्र मास के प्रथम दिन (घ) आषाढ मास के अन्तिम दिन

41.यक्षों के स्वामी कुबेर की नगरी का क्या नाम है –

(क) अलका (ख) विदिशा (ग) उज्जयिनी (घ) कुरूक्षेत्र

42. कालिदास के काव्यों में विशेषतः पायी जाने वाली शब्द शक्ति कौन–सी है –

(क) अभिधा (ख) लक्षणा (ग) व्यंजना (घ) तात्पर्या

43. शाप के कारण मेघदूतम् के यक्ष का क्या नष्ट हो गया –

(क) महिमा (ख) कान्ता (ग) आभूषण (घ) स्वामित्व

44. रामगिरि के आश्रमों का जल कैसा था –

(क) स्वच्छ (ख) पवित्र (ग) मटमैला (घ) सुन्दर

45. रामगिरि के आश्रमों के जल की पवित्रता का क्या कारण कवि ने मेघदूतम् में बताया है –

(क) यक्ष के निवास के कारण (ख) जनक तनया के स्नान के कारण

(ग) जनक भार्या के स्नान के कारण (घ) धार्मिक स्थान होने के कारण

46. प्रियाविरह में स्वर्णाभूषण गिरने से मेघदूतम् के यक्ष का कौन–सा अंग सूना हो गया था –

(क) कमर (ख) गला (ग) कलाई (घ) कान

47.''तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी,

नीत्वा मासान्कनकवलयभ्रंशरिक्तप्रकोष्ठः।''

– पंक्ति में 'कतिचित् मासान्' में कितने महीने व्यतीत होने की बात मेघदूतम् में सिद्ध होती है ?

(क) 12 महीने (ख) 8 महीने (ग) 4 महीने (घ) 9 महीने

48. मेघदूतम् का यक्ष आषाढ के पहले दिन पर्वत की चोटी से सटे हुए कैसे मेघ को देखा –

(क) वप्रक्रीडा करते हुए हाथी के समान (ख) कामक्रीडा करते हुए क्रौंच के समान

(ग) कन्दुकक्रीडा करते हुए बालकों के समान (घ) इनमें से कोई नहीं

49. मेघदूतम् का यक्ष मेघ को किससे अर्ध्य देता है –

(क) पाटलपुष्पों से (ख) पद्म–मकरन्दों से

(ग) कुटुजकुसुमों से (घ) मालती–सुमन से

50. मेघदूतम् का यक्ष मेघ को किस वंश का जानता है –

(क) पुष्कर वंश का (ख) आवर्तक वंश का

(ग) पुष्करावर्तक वंश का (घ) इनमें से कोई नहीं।

51. मेघदूतम् के अनुसार मेघ किसका प्रधान पुरूष है –

(क) कामदेव का (ख) इन्द्र देव का (ग) महादेव का (घ) विष्णु देव का

52.कालिदास के अनुसार किस व्यक्ति से की गई याचना निष्फल होने पर भी अच्छी है –

(क) धनवान् से (ख) अधम से (ग) अधिक गुण वाले से (घ) निष्फल याचना बुरी होती है।

53. मेघदूतम् के अध्ययन के आधार पर आपके अनुसार कालिदास को ज्यादा लगाव किस नगर से है –

(क) पाटलिपुत्र से (ख) उज्जियनी से (ग) हस्तिनापुर से (घ) अयोध्या से

54. कालिदास के मेघदूतम् का यक्ष कैसा है –

(क) कामी (ख) दानी (ग) क्रोधी (घ) लोभी

55. ''मानव हृदय का कवि'' और ''प्राकृतिक सौन्दर्य का कवि'' ये दोनों गुण एक साथ किस कवि में देखने को मिलता है –

(क) अश्वघोष (ख) कालिदास (ग) श्रीहर्ष (घ) कवि माघ

****